DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

समास

LIVE 23-04-2024 09:00 AM

समास (संक्षेप)

व्यास → कथावाचक

- अव्ययीभाव समास [पूर्वपद प्रधान]
- तत्पुरुष समास [उत्तरपद प्रधान]
- कर्मधारय समास [उत्तर पद प्रधान]
- द्विगु समास [उत्तर पद प्रधान]
- द्वन्द्व समास [दोनों पद प्रधान]
- बहुव्रीहि समास [दोनों पद अप्रधान]

समास में दो पद होते हैं-

(i)- पूर्वपद - पहला

(ii)- उत्तरपद - दूसरा।

समास ⇒ दो या दो अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन और सार्थक शब्द को समास कहते है।

↳ सम

सार्थक ↳ अर्थ पूर्ण शब्द

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह ⇒ सत्य के लिए आग्रह (↑ सम्प्रदान तत्पुरुष)

सत्य ↓ पूर्वपद

आग्रह ↓ उत्तरपद

सत्याग्रह ↓ समास

सत्य के लिए आग्रह ↓ समास विग्रह

नोट- समास छः प्रकार के होते हैं; परन्तु छः विकल्प में न होने पर चार का चयन करें। [क्योंकि कर्मधारय समास और द्विगु समास तत्पुरुष समास के अन्तर्गत आते है]

1. अव्ययीभाव समास - जिस समास में पूर्वपद अव्यय /प्रधान हो वहाँ अव्ययीभाव समास होता है।

अव्यय

जिसमें परिवर्तन न हो

यह वाक्य में क्रियाविशेषण का कार्य करता है।

उपसर्ग - प्रति, भर, यथा, बे, बा, ब, आ, अ, अनु, पर, दर, नि, उप, ला

उदाहरण -

प्रतिमास = हर मास

प्रत्यंग = हर अंग

प्रत्युपकार = उपकार के प्रति

प्रत्यक्ष = अक्षि के आगे

परोक्ष = अक्षि के परे

अकारण = बिना कारण के

बेकाम = बिना काम के

यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार

यथासमय = समय के अनुसार

आजीवन = जीवन के अनुसार

अनुरूप = रूप के अनुसार

निर्विवाद = बिना विवाद के

दरअसल = असल में

बेफायदा = बिना फायदे का

भरपेट = पेट भरकर

उपकूल = कूल के समीप

बखूबी = खूबी के साथ

निधड़क = बिना धड़क के

बीचों-बीच = बीच ही बीच में

दिनानुदिन = दिन के बाद दिन

प्रतिक्षण = हरक्षण

बेचैन = बिना चैन के

प्रत्येक = एक एक

लावारिस = बिना वारिस के

साफ – साफ = बिल्कुल साफ

रातों – रात = रात ही रात

घड़ी – घड़ी = घड़ी ही घड़ी

हाथों - हाथ = हाथ ही हाथ

पल – पल = पल ही पल

बार – बार = बार ही बार

रोज – रोज = रोज ही रोज

नोट – आप-ही-आप, घर-ही-घर, मन-ही-मन, कहीं-न-कहीं, कुछ-न-कुछ, मुँह-आ-मुँह, सर-आ-सर, एक-आ-एक (कभी-कभी द्विरुक्त शब्दों के बीच ही, से, न, आ आदि रहता है)

[यदि पूर्व पद और उत्तरपद समान हो]

2. तत्पुरुष समास = जिस समास में पूर्वपद गौण (नगण्य) तथा उत्तर पद प्रधान होता है। तत्पुरुष समास कहलाता है।

जैसे पदों के बीच में (कर्म कारक से लेकर अधिकरण कारक तक विभक्ति चिह्न का प्रयोग किया जाता है।)

विभक्तियों या परसर्ग के आधार पर तत्पुरुष समास छः प्रकार का होता है।

(ii)- कर्म तत्पुरुष (द्वितीया तत्पुरुष) ⇒ इस समास में समस्त पद के बीच 'को' विभक्ति चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

गगनचुंबी ⇒ गगन को चूमने वाला

ग्रन्थकार = ग्रन्थ को लिखने वाला

स्वर्गगत ⇒ स्वर्ग को गया हुआ

सम्मानप्राप्त ⇒ सम्मान को प्राप्त

यशप्राप्त = यश को प्राप्त

मतदाता = मत को देने वाला

चिड़ीमार = चिड़िया को मारने वाला।

मुँहतोड़ = मुँह को तोड़ने वाला

(ii)-करण तत्पुरुष (तृतीया तत्पुरुष) ⇒ इसके समस्त पदों के बीच में से / के द्वारा विभक्ति का प्रयोग होता है।

सूररचित - सूर द्वारा रचित

तुलसीकृत - तुलसी द्वारा रचित

रसभरा - रस से भरा

अकालपीड़ित - अकाल से पीड़ित

आचारकुशल - आचार से कुशल

मनचाहा - मन से चाहा हुआ

क्षुधातुर - क्षुधा से आतुर